इस्लाम का पालन न करनेवाले का परिणाम

[**हिन्दी – Hindi –** هندي]

मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन सालेह अस्सुहैम

अनुवादः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2013 - 1434

IslamHouse.com

عاقبة من لم يلتزم بالإسلام

« باللغة الهندية »

محمد بن عبد الله بن صالح السحيم

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2013 - 1434

IslamHouse.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

इस्लाम का पालन न करने वाले का परिणाम

इस्लाम अल्लाह का धर्म है, और वही एक मात्र सच्चा धर्म है, और वही वह धर्म है जिसे सभी संदेश्वाहक और ईश्दूत लेकर आए हैं। अल्लाह तआला ने इस में विश्वास (ईमान) रखने वाले के लिए लोक व परलोक में महान प्रतिफल और इनाम का वादा किया है और उसके साथ कुफ़्र करने वाले को कठोर सज़ा की धमकी दी है।

चूँकि अल्लाह तआला ही इस ब्रह्माण्ड का रचयिता, सृष्टा, स्वामी और नियंत्रण कर्ता है, और हे मनुष्य तू उसकी सृष्टि और रचनाओं में से एक सृष्ट है, उसने तेरी रचना की और ब्रहमाण्ड की सभी चीज़ों को तेरे अधीन कर दिया, तेरे लिए अपना धर्मशास्त्र व नियम निर्धारित किया, और तुझे उसका पालन करने का आदेश दिया ; अतः यदि तू उस पर ईमान लाया, और जिस चीज़ का उसने तुझे आदेश दिया है उसका पालन किया, और जिस चीज़ से उसने तुझे रोका है उससे रूक गया; तो उस स्थायी नेमत़ के साथ सफल होगा जिसका अल्लाह तआला ने

परलोक में तुझसे वादा किया है, और तुझे संसार में विभिन्न प्रकार की नेमतों का सौभाग्य प्राप्त होगा जिससे अल्लाह तुझे सम्मानित करेगा, और तू सबसे परिपूर्ण बुद्धि वाले और सबसे पवित्र आत्मा वाले लोगों अर्थात् ईश्दूतों, संदेष्टाओं, सदाचारियों और निकटवर्ती स्वर्गदूतों की समानता अपनाने वाला होगा।

और यदि तू ने नास्तिकता का रास्ता अपनाया और अपने पालनहार के आदेशों का उल्लंघन किया ; तो अपने सांसारिक जीवन और परलोक में घाटा उठाएगा, लोक व परलोक में उसके क्रोध और प्रकोप का सामना करेगा, और तू सबसे दुष्ट लोगों, सबसे बुद्धिहीन लोगों, और सबसे हीन आत्मा वाले लोगों जैसे शैतानों, अत्याचारियों, और भ्रष्टाचारियों की समानता अपनाने वाला होगा। यह परिणाम तो सार रूप से है।

अब विस्तार के साथ कुफ्र (नास्तिकता) के कुछ परिणामों का उल्लेख किया जा रहा है, और वे इस प्रकार हैं :

1– भय और असुरक्षा :

अल्लाह तआला ने अपने ऊपर ईमान रखने वालों और अपने संदेष्टाओं का पालन करने वालों के लिए सांसारिक जीवन और

परलोक में संपूर्ण सुरक्षा का वादा किया है। अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿الَّذِينَ آمَنُواْ وَلَمْ يَلْبِسُواْ إِيمَانَهُم بِظُلْمٍ أُوْلَـئِكَ لَهُمُ الأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ ﴾

[سورة الأنعام: ٨٢]

''जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान में शिर्क (अनेकेश्वरवाद) की मिलावट नहीं की, उन्हीं लोगों के लिए सुरक्षा है और वही लोग मार्गदर्शन प्राप्त हैं।'' (सूरतुल अन्आम : 82).

अल्लाह तआला ही सुरक्षा दाता व निरीक्षक है, और वही ब्रह्माण्ड की सभी चीज़ों का स्वामी है। जब वह किसी बंदे से उसके ईमान की वजह से प्यार करता है तो उसे सुरक्षा, शांति और चैन प्रदान कर देता है, और अगर मनुष्य उसके साथ कुफ्र करता है तो वह उसके चैन और सुरक्षा को छीन लेता है। अतः आप ऐसे व्यक्ति को परलोक के जीवन में अपने परिणाम के प्रति भयभीत, दुनिया में अपने ऊपर आपदाओं व बीमारियों का खतरा महसूस करने वाला, और अपने भविष्य के बारे में डरने वाला पायेंगे। इसीलिए वह असुरक्षा की भावना और अल्लाह पर

भरोसा (विश्वास) ने होने के कारण, जीवन और संपत्ति का बीमा करवाता है।

2– कठिन जीवन :

अल्लाह ने मनुष्य को पैदा किया और बह्माण्ड की सभी चीज़ों को उसके अधीन कर दिया, और प्रत्येक प्राणी के लिए जीविका और आयु से उसका हिस्सा आवंटित कर दिया है। आप पक्षी को देखते हैं कि वह सुबह–सवेरे अपनै घौंसले से बाहर जाता है ताकि अपनी जीविका तलाश करे, चुनाँचे वह उसे पा लेता है, और एक डाली से दूसरी डाली पर स्थानांतरित होता रहता है, और सबसे मधुर स्वर में गाता है। मानव भी इन्हीं प्राणियों में से एक प्राणी है जिनके लिए उनकी आजीविका और मृत्यु को निर्धारित कर दिया गया है। यदि वह अपने पालनहार पर ईमान लाया और उसके धर्मशास्त्र पर जमा रहा, तो वह उसे सौभाग्य, खुशी और स्थिरता प्रदान करेगा और उसके मामले को सहज बना देगा, भले ही उसके लिए जीवन की केवल न्यूनतम आवश्यकताएं ही उपलब्ध हों।

लेकिन अगर उसने अपने पालनहार के साथ कुफ्र किया और उसकी पूजा से अहंकार प्रदर्शित किया ; तो वह उसके जीवन

को तंग और कठोर बना देगा, और उसके ऊपर दुःख और चिंता को इकट्ठा कर देगा, भले ही वह सुख व आराम के सभी साधनों और नाना प्रकार की सामग्री का मालिक हो। क्या आप उन देशों में आत्म हत्या करने वालों की बड़ी संख्या नहीं देखते जो अपने नागिरकों के लिए समृद्धि व विलासिता के सभी साधन सुनिश्चित करते हैं ? क्या आप जीवन का आनंद लेने के लिए विभिन्न प्रकार के फर्नीचरों और तरह तरह के पर्यटनों में अपव्यय को नहीं देखते? इस बारे में अपव्यय करने पर जो चीज़ तत्पर करती है वह दिल का ईमान व विश्वास से रिक्त होना, तंगी व संकुचिता का एहसास, और नित्य नये साधनों के द्वारा इस चिंता के मोचन का प्रयास है, इस संदर्भ में अल्लाह का क्या फरमान कितना सच्चा है :

﴿وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِى فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمَى ﴾

[سورة طه: ١٢٤].

''और हाँ जो मेरी याद से मुँह फेरेगा उसके जीवन में तन्गी रहेगी और हम उसे क़ियामत के दिन अँधा करके उठायेंगे।'' (सूरत ताहा :124)

3– वह अपने आपके साथ और अपने आसपास के ब्रह्माण्ड के साथ संघर्ष (खींचतान) में रहता हैः

क्योंकि उसकी आत्मा की उत्पत्ति तौहीद (एकेश्वरवाद) पर हुई है, अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿فِطْرَةَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا﴾ [سورة الروم: ٣٠]

''अल्लाह तआला की वह फित्रत (प्रकृति) जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया है।'' (सूरतुर्रूम : 30)

उसके शरीर ने अपने पैदा करनेवाले के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया और उसकी व्यवस्था के अनुसार चल रहा है। लेकिन काफिर (नास्तिक) अपनी प्रकृति (स्वभाव) के विपरीत और उल्टा करता है, और अपने वैकल्पिक मामलों में अपने पालनहार के आदेश का विरोध करता है, तो यद्यपि उसका शरीर अपने पालनहार के लिए समर्पित है, परंतु उसका स्वैच्छिक विकल्प अपने पालनहार का विरोधी है।

तथा वह अपने आसपास के ब्रह्माण्ड के साथ भी संघर्ष (खींचतान और टकराव) में है ; क्योंकि यह पूरा ब्रह्माण्ड अपने

सबसे बड़े आकाशगंगा से लेकर अपने सबसे छोट कीट तक उस तक़्दीर (अनुमान) पर चल रहा है जिसे उसके पालनहार ने उसके लिए निर्धारित किया है, अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿ثُمَّ اسْتَوَى إِلَى السَّمَاء وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ﴾ [سورة فصلت: ١١].

''फिर वह आकाश की ओर बुलंद हुआ और वह धुँआ (सा) था, तो उसे और धरती को हुक्म दिया कि तुम दोनों आओ, चाहो या न चाहो, दोनों ने निवेदन किया कि हम खुशी–खुशी हाज़िर हैं।'' (सूरत फुस्सिलत : 11).

बल्कि यह ब्रह्माण्ड उससे प्यार करता है जो अपने अल्लाह के प्रति समर्पण में उससे सहमत है, और उससे घृणा करता है जो उसका विरोध करता है, और काफिर (नास्तिक) ही इस सृष्टि में विसंगति और विचित्र है कि उसने अपने आपको अपने पालनहार का विपक्षी और उसका प्रतिद्वंद्वी बना लिया है, इसीलिए आकाश व धरती और सभी प्राणियों के लिए लायक़ और योग्य है कि वे इससे घृणा करें और इसकी नास्तिकता और विधर्मता से नफरत करें, अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है :

﴿وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَٰنُ وَلَدًا لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا تَكَادُ السَّمَاوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا أَن دَعَوْا لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدًا وَمَا يَنبَغِي لِلرَّحْمَٰنِ أَن يَتَّخِذَ وَلَدًا إِن كُلُّ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتِي الرَّحْمَٰنِ عَبْدًا ﴾ [سورة مريم: ٨٨-٩٣].

''और उनका कहना तो यह है कि अल्लाह रहमान ने संतान बना रखी है। निःसंदेह तुम बहुत (बुरी और) भारी चीज़ लाए हो। करीब है कि इस कथन से आकाश फट जाए और धरती में दरार हो जाए और पहाड़ कण–कण हो जाएं। कि वे रहमान की संतान साबित करने बैठे हैं। और रहमान के लायक़ नहीं कि वह संतान रखे। आकाशों और धरती में जो भी हैं सब अल्लाह के गुलाम बनकर ही आने वाले हैं।'' (सूरत मरियम : 88–93)

तथा अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फिरऔन और उसके सैनिकों के बारे में फरमाया :

﴿فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاء وَالأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ﴾ [سورة الدخان: ٢٩].

''तो उनपर न आकाश और धरती रोए और न उन्हें अवसर मिला।'' (सूरतुद दुखान : 29)

4– वह अज्ञानता का जीवन व्यतीत करता है :

क्योंकि नास्तिकता (कुफ्र) वास्तव में अज्ञानता है, बल्कि वह सबसे बड़ी अज्ञानता है ; क्योंकि काफिर (नास्तिक) अपने पालनहार से अनभिज्ञ होता है, वह इस ब्रह्माण्ड को देखता है जिसकी उसके पालनहार ने रचना की है तो उसे खूब बढ़िया बनाया है, तथा वह स्वयं अपने अंदर उसकी महान कारीगरी और भव्य रचना देखता है, फिर भी वह उस अस्तित्व से अनजाना बन जाता है जिसने इस ब्रह्माण्ड की रचना की है और जिसने उसके अस्तित्व को बनाया है, क्या यह सबसे बड़ी अज्ञानता नहीं है ?

5– वह अपने ऊपर और अपने आसपास के लोगों पर जुल्म (अन्याय) करते हुए जीवन यापन करता है :

क्योंकि उसने अपने आपको उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए समर्पित नहीं किया है जिसके लिए वह पैदा किया गया है, और उसने अपने पालनहार की पूजा नहीं की, बल्कि उसके अलावा

की पूजा की, और जुल्म (अन्याय) किसी चीज़ को उसके असली स्थान के अलावा में रखने को कहते हैं, और पूजा को उसके वास्तविक हक़दार से फेरने से बड़ा अन्याय क्या है, जबकि लुक़मान हकीम ने शिर्क (अनेकेश्वरवाद) की बुराई को स्पष्ट करते हुए फरमाया :

﴿يَا بُنَيَّ لا تُشْرِكْ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾ [سورة لقمان : ١٣]

''ऐ मेरे बेटे! तू अल्लाह के साथ शिर्क न करना, निःसंदेह शिर्क बड़ा अन्याय (महा पाप) है।'' (सूरत लुक़मान : 13)

तथा वह उसके आसपास के मानव और प्राणियों के साथ भी जुल्म (अन्याय) है ; क्योंकि वह हक़ वाले के हक़ को नहीं पहचानता है, अतः जब क़ियामत का दिन होगा तो हर वह मानव या जानवर जिसके साथ उसने अन्याय किया है, उसके रूबरू खड़ा होकर अपने पालनहार से अपने लिए उससे बदला लेने की मांग करेगा।

6– उसने दुनिया में अपने आप को अल्लाह की घृणा और उसके क्रोध का निशान बनायाा है :

चुनाँचे वह, तत्काल दंड के रूप में, आपदाओं और वेदनाओं से पीड़ित होने के निशाने पर होता है, अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है :

﴿أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُواْ السَّيِّئَاتِ أَن يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لاَ يَشْعُرُونَ أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُم بِمُعْجِزِينَ أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَى تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَؤُوفٌ رَّحِيمٌ ﴾ [النحل : ٤٥-٤٧]

''क्या बुरा छल–कपट करने वाले इस बात से निश्चिंत हो गए हैं कि अल्लाह उन्हें धरती में धंसा दे या उनके पास ऐसी जगह से अज़ाब (प्रकोप) आ जाए, जिसका उन्हें एहसास भी न हो। या उन को चलते–फिरते पकड़ ले, तो यह किसी भी तरह से अल्लाह को मजबूर नहीं कर सकते। या उन्हें डरा–धमका कर पकड़ ले, फिर बेशक तुम्हारा पालनहार बड़ा करूणामइ और दयावान है।'' (सूरतुन नह्ल : 45–47).

तथा अल्लाह ने फरमाया :

﴿وَلاَ يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُواْ تُصِيبُهُم بِمَا صَنَعُواْ قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِّن دَارِهِمْ حَتَّى يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لاَ يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ﴾[سورة الرعد : ٣١]

''काफिरों को तो उनके कुफ्र के बदले सदैव ही कोई न कोई सख्त सज़ा पहुँचती रहेगी, या उनके मकानों के आसपास उतरती रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ पहुँचे, निःसंदेह अल्लाह तआला वादा नहीं तोड़ता।'' (सूरतुर रअद : 31).

तथा अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फरमाया :

﴿أَوَ أَمِنَ أَهْلُ الْقُرَى أَن يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا ضُحًى وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴾ [سورة الأعراف : ٩٨]

''क्या इन बस्तियों के रहने वाले इस बात से निश्चिंत हो गए हैं कि उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े आ जाए जिस समय वे खेलों में व्यस्त हों।'' (सूरतुल आराफ़ : 98).

और अल्लाह के स्मरण (ज़िक्र) से उपेक्षा करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का यही परिणाम होता है, अल्लाह तआला पिछले नास्तिक समुदायों की सज़ाओं के बारे में सूचना देते हुए फरमाता है :

﴿فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنْبِهِ ۖ فَمِنْهُمْ مَنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ وَمِنْهُمْ مَنْ أَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴾[سورة العنكبوت : ٤٠]

''फिर तो हम ने हर एक को उसके पाप की सज़ा में धर लिया, उनमें से कुछ पर तो हम ने पत्थरों की बारिश की, उन में से कुछ को तेज़ चींख ने दबोच लिया, उन में से कुछ को हम ने धरती में धँसा दिया, और उन में से कुछ को हम ने पानी में डुबो दिया। अल्लाह तआला ऐसा नहीं कि उन पर जुल्म करे, बल्कि वही लोग अपनी जानों पर जुल्म करते थे।'' (सूरतुल अनकबूत : 40).

इसी तरह आप अपने पास के लोगों की विपदाओं को देख सकते हैं जिन पर अल्लाह की सज़ी उतरी है।

7– उसके लिए विफलता और घाटा लिख दिया जाता है :

उसने अपने जुल्म (अन्याय) के कारण सबसे बड़ी वह चीज़ खो दी जिससे दिलों और आत्माओं को आनंद मिलता है, और वह अल्लाह की पहचान, उसकी मुनाजात से लगाव, और उससे चैन व शांति का अनुभव है। उसने दुनिया को गवाँ दिया क्योंकि वह उसमें एक दुखद और उलझन का जीवन बिताता है, तथा उसने अपनी आत्मा को भी नष्ट कर दिया जिसकी वजह से वह उसे एकत्रित कर रहा था; इसलिए कि उसने उसे उस लक्ष्य पर नहीं लगाया जिसके लिए उसे पैदा किया गया था। तथा उसे दुनिया में भी उससे खुशी प्राप्त नहीं हुई ; क्योंकि उसने दुर्भाग्यपूर्ण जीवन बिताया, दुर्भाग्य अवस्था में उसकी मृत्यु हुई और (क़ियामत के दिन) दुर्भागी लोगों के साथ उठाया जायेगा। अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا۟ أَنفُسَهُم﴾ [سورة الأعراف: ٩].

''और जिसका (नेकियों का) पलड़ा हल्का होगा, तो ये वे लोग हैं जिन्हों ने अपना घाटा कर लिया।'' (सूरतुल आराफ़ : 9).

तथा उसने अपने परिवार का भी घाटा किया, क्योंकि वह उनके साथ अल्लाह के साथ कुफ़्र की हालत में जीवन बिताया, अतः वे भी दुर्भाग्य और तंगी में उसी के समान बराबर हैं, और उनका ठिकाना जहन्नम है, अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَلَا ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ﴾ [سورة الزمر: ١٥]

''वास्तव में घाटा उठाने वाले वे लोग हैं जो क़ियामत के दिन अपने आप को और अपने परिवार को घाटे में डाल देंगे।'' (सूरतुज़्ज़ुमर : 15).

और क़ियामत के दिन वे नरक की ओर इकट्ठा किए जाएंगे, और वह बुरा ठिकाना है, अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيمِ ﴾ [سورة الصافات : ٢٢-٢٣].

''जो लोग जुल्म करते थे उन्हें इकट्ठा करो, और उनके समान लोगों को और जिन–जिन की वे अल्लाह को छोड़कर पूजा

करते थे, (उन सब को जमा करके) उन्हें नरक का रास्ता दिखा दो।'' (सूरतुस्साफ़्फ़ात : 22, 23).

8– वह अपने पालनहार के साथ कुफ़्र करने वाला और उसकी नेमतों का इनकार (नाशुक्री) करने वाला होता है :

क्योंकि अल्लाह ने उसे अनस्तित्व से अस्तित्व प्रदान किया है, और उस पर सभी प्रकार की नेमतें व अनुकम्पाएं अवतरित की हैं, फिर भी वह उसके अलावा की पूजा करता है, उसके अलावा के साथ दोस्ती रखता है और उसके अतिरिक्त का आभारी होता है .... तो इससे बढ़कर उसकी नेमतों का इनकार और क्या हो सकता है ? और इससे अधिक घृणित कृत्धनता और नाशुक्री और क्या हो सकती है ?

9– वह वास्तविक जीवन से वंचित कर दिया जाता है :

इसलिए कि जीवन के योग्य मनुष्य वह है जो अपने पालनहार पर ईमान लाए, अपने उद्देश्य को समझे, अपने अंजाम (परिणाम) से अवगत हो और मरने के बाद पुनः जीवित किए जाने पर यक़ीन रखता हो। चुनाँचे वह हर हक़दार के हक़ को पहचानता हो, अतः वह कोई हक़ नहीं मारता, न किसी प्राणी को

कष्ट पहुँचाता है, जिसकी वजह से वह खुशहाल लोगों के समान जीवन व्यतीत करता है, और दुनिया व आख़िरत में उत्तम जीवन प्राप्त करता है। अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿مَنْ عَمِلَ صَالِحاً مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيَاةً طَيِّبَةً ﴾

[النحل:٩٧].

''जो व्यक्ति सत्कर्म करे, चाहे वह पुरूष हो या स्त्री, किन्तु मोमिन हो, तो निःसन्देह हम उसे उत्तम जीवन प्रदान करेंगे।'' (सूरतुन्–नह्ल : 97)

तथा आखिरत में :

﴿وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ﴾ [سورة الصف:١٢]

''(वे लोग) सदा रहने वाले बागों में अच्छे घरों में होंगे, यह बहुत बड़ी सफलता है।'' (सूरतुस सफ : 12).

परंतु जो व्यक्ति इस जीवन में चौपायों के समान जीवन व्यतीत करता है, चुनाँचे वह न अपने पालनहार को जानता है और न अपने जीवन उद्देश्य को जानता है, और न उसे यह पता होता है कि उसका अंतिम परिणाम कहाँ है ?

बल्कि उसका उद्देश्य खाना, पीना और सोना है . . तो इसके बीच और अन्य जानवरों के बीच क्या अंतर है!? बल्कि यह उनसे भी अधिक गुमराह है, अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फरमाया :

﴿وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالإِنسِ لَهُمْ قُلُوبٌ لاَّ يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لاَّ يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لاَّ يَسْمَعُونَ بِهَا أُوْلَـئِكَ كَالأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ أُوْلَـئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ﴾[سورة الأعراف: ١٧٩].

''और हम ने ऐसे बहुत से जिन्न और इन्सान जहन्नम के लिए पैदा किए हैं, जिनके दिल ऐसे हैं जिनसे वे नहीं समझते, और जिनकी आँखें ऐसी हैं जिनसे वे नहीं देखते, और जिनके कान ऐसे हैं जिनसे वे नहीं सुनते। ये लोग चौपायों (पशुओं) की तरह हैं, बल्कि उनसे भी अधिक भटके हुए हैं। यही लोग गाफिल हैं।'' (सूरतुल आराफ : 179)

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ إِنْ هُمْ إِلاَّ كَالأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلا﴾ [سورة الفرقان: ٤٤].

''क्या आप इसी सोच में हैं कि उनमें से अधिकतर सुनते या समझते हैं, वे तो निरे जानवर की तरह हैं, बल्कि उनसे भी अधिक भटके हुए हैं।'' (सूरतुल फ़ुरक़ान : 44)

10– वह सदैव अज़ाब (यातना) में रहेगा :

क्योंकि काफिर एक यातना से दूसरी यातना की ओर स्थानांतरित होता रहता है, वह दुनिया से – जबकि वह उसकी वेदना और कठिनाई के घूँट पी चुका होता है – निकलकर आखिरत के घर की ओर जाता है, और उसके पहले चरण में उसके पास मृत्यु के फरिश्ते आते हैं जबकि उनसे पहले यातना के फरिश्ते आ चुके होते हैं ताकि उसे उस सज़ा का मज़ा चखाएँ जिस का वह हक़दार है। अल्लाह तआला का फरमाता है :

﴿وَلَوْ تَرَى إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ﴾ [الأنفال:٥٠].

''काश आप देखते जब फरिश्ते काफिरों के प्राण निकालते हैं, उनके मुख पर और नितम्बों पर मार मारते हैं।'' (सूरतुल–अन्फाल : 50)

फिर जब उसकी प्राण निकल जाती है और उसे उसकी क़ब्र में उतारा जाता है तो उसका सामना अति कठोर यातना से होता है, अल्लाह तआला ने फिरऔनियों के बारे में सूचना देते हुए फरमाया :

﴿النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوّاً وَعَشِيّاً وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ﴾ [غافر:٤٦].

''आग है जिस पर वे प्रातः काल और सायं काल प्रस्तुत किये जाते हैं, और जिस दिन महा प्रलय होगा (आदेश होगा कि) फ़िर्औनियों को अत्यन्त कठिन अज़ाब (यातना) में झोंक दो।'' (सूरतुल–मोमिन : 46)

फिर जब क़ियामत का दिन होगा और लोगों को उठाया जाएगा, और कर्मों को पेश किया जायेगा, और काफिर

देखेगा कि अल्लाह ने उसके सभी कामों को उस किताब में गिन रखा है जिसके बारे में अल्लाह ने फरमाया है:

﴿وَوُضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يَا وَيْلَتَنَا مَالِ هَذَا الْكِتَابِ لا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلا كَبِيرَةً إِلاَّ أَحْصَاهَا﴾ [سورة الكهف: ٤٩].

''और कर्म–पत्र (आमालनामे) आगे रख दिये जायेंगे, तो आप उस समयं अपराधियों को देखेंगे कि वे उसके लेख से डर रहे हों गे, और कह रहे होंगे कि : हाय हमारा विनाश! यह कैसा लेख–पत्र है जिसने कोई छोटा–बड़ा (कार्य) बिना गिने हुए नहीं छोड़ा।'' (सूरतुल कहफ : 49)

उस समय काफिर व्यक्ति कामना करेगा कि वह मिट्टी हो गया होता :

﴿يَوْمَ يَنظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ يَا لَيْتَنِي كُنتُ تُرَابًا ﴾ [النبأ : ٤٠].

''जिस दिन इन्सान अपने हाथों की कमाई को देख लेगा, और काफिर (नास्तिक) कहेगा कि काश मैं मिट्टी बन जाता।'' (सरतुन नबा : 40)

तथा उस दिन की स्थिति की गंभीरता के कारण यदि मनुष्य धरती की सभी संपत्तियों का मालिक हो तो उसे उस दिन के अज़ाब से छुटकारा पाने के लिए फिद्या (फिरौती) दे देगा, अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لافْتَدَوْا بِهِ مِن سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ﴾ [سورة الزمر: ٤٧]

''और यदि ज़ालिमों के पास वह सब कुछ हो जो धरती पर है, और उसके साथ उतना ही और हो, तो भी वे क़ियामत के दिन बुरे दण्ड के बदले में ये सब कुछ दे दें।'' (सूरतुज़ ज़ुमर : 47)

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿يُبَصَّرُونَهُمْ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ وَمَن فِي الأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنجِيهِ﴾ [سورة المعارج: ١١-١٤].

''पापी उस दिन के अज़ाब के बदले (फिरौती) में अपने पुत्रों को देना चाहेगा, अपनी पत्नी को और अपने भाई को। और अपने परिवार को जो उसे पनाह देता था। और धरती के सभी लोगों को, ताकि ये उसे मुक्ति दिला दें।'' (सूरतुल मआरिज : 11–14).

और इसलिए कि वह घर बदले का घर है, इच्छाओं और कामनाओं का घर नहीं है, इसलिए जरूरी है कि मनुष्य अपने अमल का बदला पाए, अगर अच्छा काम है तो अच्छा बदला और अगर बुरा किया है तो बुरा बदला। तथा काफिर आख़िरत के घर में जो सबसे बुरी सज़ा पायेगा वह नरक का अज़ाब है, और अल्लाह ने नरकवासियों पर अज़ाब की श्रेणियों को अनेक प्रकार के कर दिए हैं, ताकि वे अपने किए का मज़ा चखें। अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ﴾

[سورة الرحمن : ٤٣-٤٤]

''यह है वह नरक जिसे अपराधी झूठा मानते थे। उसके और गर्म उबलते पानी के बीच चक्कर खायेंगे।'' (सूरतुर रहमान : 43–44).

तथा उनके पेय और पोशाक के बारे में फरमाया :

﴿فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن نَّارٍ يُصَبُّ مِن فَوْقِ رُؤُوسِهِمُ الْحَمِيمُ يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ وَلَهُم مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ﴾ [سورة الحج: ١٩-٢١].

''काफिरों के लिए आग के कपड़े नाप कर काटे जायेंगे और उनके सिर के ऊपर से गर्म पानी की धारा बहायी जायेगी। जिससे उनके पेट की सब चीज़ें और खालें गला दी जायेंगी। और उनकी सज़ा के लिए लोहे के हथौड़े हैं।'' (सूरतुल हज्ज : 19–21).